भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में झारखण्ड की महिलाओं का योगदानः एक ऐतिहासिक अध्ययन(1857—1947ई.)

पीएच.डी. पंजीयन हेतु शोध प्रस्ताव

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद, (झारखण्ड)

शोध निदेशिका

डॉ. संजीदा खातुन
सहायक प्राध्यापिका
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल
विश्वविद्यालय धनबाद, (झारखण्ड)

शोधार्थी

शिबु कुमार मंडल
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,
बिनोद बिहारी महतो
कोयलांचल
विश्वविद्यालय धनबाद

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में झारखंड की महिलाओं का योगदानः एक ऐतिहासिक अध्ययन(1857–1947ई.)

भूमिका(Introduction):

झारखंड ऋग्वैदिक काल से लेकर मुगल काल तक प्राकृतिक रूप से आच्छादित शांतिप्रिय प्रदेश रहा है। अंग्रेजों के झारखंड प्रवेश के बाद से ही, एक अजीब सी हलचल यहाँ के जनजातीय समाज में देखने को मिलता है, जो कालांतर में हूल और उलगुलान का रूप ले लेती है। यह उलगुलान जल, जंगल और ज़मीन के अधिकार को लेकर प्रारंभ हुई जिसने कालांतर में राष्ट्रीय आंदोलन को गति दी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सभी वर्गों का समान रूप से योगदान रहा है, किन्तु समाज की आधी आबादी यानि महिलाओं के योगदान को इतिहास में उचित स्थान प्राप्त नहीं हो सका है। एक सभ्य समाज में सभी समुदाय का समान स्थान तभी प्राप्त हो सकता है, जब महिलाओं के योगदान के महत्व को रेखांकित किया जाए। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में राष्ट्र स्तर पर कई महिलाओं का योगदान रहा है, किन्तु आदिवासी बहुल राज्य झारखंड में यहाँ के आदिवासियों–गैर आदिवासियों की भूमिका को उचित स्थान प्राप्त नहीं हो सका है। अतः समय आ गया इन गुमनाम वीरांगनाओं के बलिदान को शोध के माध्यम से उजागर किया जाय।

झारखंड में अंग्रेजों के दस्तक से ही क्षेत्रीय स्तर पर विद्रोह शुरू हो गया था, परंतु राष्ट्रीय आंदोलन की दृष्टि से देखा जाए तो 1857 के विद्रोह की घटना के साथ ही इसका स्वरूप राष्ट्रीय होने लगा जिसे झारखंड में संथाल हूल के एक विस्तार के रूप में भी देखा जाता है। 1857 के विद्रोह की घटना की छाप झारखंड के कई स्थानों जैसे सिंहभूम और मानभूम के अंचल चाइबासा, राँची, रामगढ़, हजारीबाग तथा संथाल परगना आदि में मिलती है।

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना के साथ राष्ट्रीय आंदोलन को आधार मिला, जिसने पूरे देश को एक सूत्र में बाँध दिया। इसने झारखंड को भी प्रभावित किया तथा यहाँ के मूल निवासियों को राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। राज्य के अधिवासियों ने भगवान बिरसा व सेनापति गया मुंडा एवं उनकी पत्नी माकी मुंडा, मंझिआ मुंडा, गिनी मुंडा, नागी मुंडा, एंव अन्य के साथ मिलकर बिरसा उलगुलान द्वारा लोगों में औपनिवेशिक सता को छोटानागपुर से उखाड फेंकने एवं अपने स्वाभिमान, स्वतंत्रता, शोषण के विरूद्ध, स्वधर्म एवं अबुआ राज्य की स्थापना के भरसक प्रयास किये। इस उलगुलान के परिणामस्वरूप ही अंग्रेजों ने जनजातीय विद्रोह से थक हारकर छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट पारित किया। चूँकि यहाँ के अधिवासियों द्वारा अंग्रेजों के चरित्र का पर्दाफाश हो चुका था। अतः कालांतर में भी अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ लोग भावी आंदोलन से जुडते गए।

गाँधी जी के नेतृत्व एवं विचारधाराओं का झारखंड के लोंगों में विशेष महत्व रहा है जिससे प्रेरित होकर यहाँ के स्वतंत्रता सेनानियों ने आजादी की लडाई में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उदाहरण के लिए लोहरदगा, गुमला, राँची जैसे क्षेत्रों में ताना भगत समुदाय के लोगों ने गाँधी जी के विचारों से ही प्रेरित होकर अहिंसा, चरखा एवं खादी को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बना लिया है। ये ताना भगत गाँधी जी की सभाओं, वक्तव्यों आदि को सुनने के लिए कई मील की दूरियाँ पैदल ही तय करते थे। गाँधी जी ने छोटानागपुर के संबंध में कहा था, **"कपास बोओ, चरखा चलाओ, सूत कातो, कपडा बुनो छोटानागपुर आजाद हो जाएगा"।** गाँधी जी ने देवघर में मद्यनिषेध और छुआछूत को मिटाने के लिए भी कार्य किये। गाँधीजी के विचारधाराओं एवं राष्ट्रीय आंदोलन को सहयोग हेतु राँची में महिलाओं के एक समूह ने गाँधी जी को आभूषण और रूपये प्रदान किये। राँची के गिरधारी साहू की पत्नी इंदिरा देवी

गोद में बच्ची के साथ दो वर्षों के लिए जेल गई। संत कोलंबस के भौतिक विज्ञान के व्याख्याता की पुत्री साधना को भी जेल भेजा गया। हजारीबाग के नमक सत्याग्रह में सरस्वती देवी और मीरा देवी को जेल भेजा गया। इस **गिरफतारी** के बाद भी श्रीमती गौरी दास एंव अन्य सविनय अवज्ञा आंदोलन के संदर्भ मे हजारीबाग जेल गई थी। संथाल परगना के कई महिलाएँ यथा जमुना देवी, पन्ना देवी, शैलबाला राय आदि स्वतंत्रता संग्राम में पीछे नहीं रही। शैलबाला राय ने राजनितिक कार्यकर्ताओं के लिए भोजन का प्रबंध किया था। इस तरह से भारत की आजादी की लडाई में महिलाओं की भूमिका अतुल्यनीय रही है। लेकिन इतिहास में इनकी भूमिकाओं पर सीमित कार्य किया गया है। अतः इस क्षेत्र में शोध की नितांत आवश्यकता है।

शोध समस्या(Research Problem):

झारखंड छोटानगपुर पठार का भाग है, जिसकी चर्चाएँ इतिहास के विभिन्न कालखंडों में कई नामों से की गई है। प्राचीन साहित्यों, प्रारंभिक एवं मध्यकालीन विदेशी यात्रियों के विवरणों, चीनी–फारसी ग्रंथों आदि में इसका उल्लेख है। इसे वैदिक युग में किक्कट प्रदेश, महाभारत में पुंडरीक देश, ह्वेनसांग ने इसको कि–लो–ना–सु–फा–ला–ना अथवा कर्णसुवर्ण, फाहियान ने कुक्कट–लाड़, मुगल काल में यह कोकरा के नाम से प्रसिद्ध था।

भारत के अन्य राज्यों की भाँति यहाँ की महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न चरणों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। चाहे बात संथाल विद्रोह की हो या 1857 के विद्रोह तथा अन्य विद्रोहों की, इन विरांगनाओं ने झारखंड के विभिन्न क्षेत्रों से तत्कालीन नेतृत्वकर्ताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर मदद की है। झारखंड की महिलाओं की भूमिका भावी आंदोलनों यथा बिरसा उलगुलान, ताना भगत आंदोलन, गाँधीवादी आंदोलनों आदि में दिखाई देती है। परंतु यह पहलू ऐतिहासिक दृष्टि से व्यापक अध्ययन से वंचित रहा है।

20वीं सदी में गाँधी जी के नेतृत्व में चले राष्ट्रीय आंदोलन में इनके विचारधाराओं के प्रबल समर्थक रहे ताना भगत समुदाय तथा झारखंड की महिला हस्तियों यथा इंदिरा देवी, सरस्वती देवी, मीरा देवी, जमुना देवी, पन्ना देवी, शैलबाला राय, आदि ने गाँधीवादी आंदोलनों के विभिन्न चरणों में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है, जिसका झारखंड के साथ–साथ भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है किंतु इनकी भूमिकाओं का ऐतिहासिक विश्लेषण सीमित रहा है।

साहित्य–समीक्षा(Review of Literature):

शोध कार्य के लिए विविध साहित्यों, दस्तावेजों, शोध पत्रिकाओं आदि का अवलोकन किया गया है। इतिहासकारों के कार्यों की सहायता ली गई है। अयोध्या सिंह के कृति **'भारत का मुक्ति संग्रामः 18वीं और 19वीं सदी के विद्रोह'**[1] भारत में विभिन्न विद्रोंहों के साथ–साथ 1857 के विद्रोह में झारखंड की भूमिका के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। शशि भूषण चौधरी की पुस्तक **'सिविल रिबेलियन इन द इंडियन म्युटनिज (1857–59)'**[2] झारखंड में औपनिवेशिक शोषण एवं जनजातियों पर किये अत्याचारों पर प्रकाश डालती है। शरत चन्द्र राय की पुस्तक **'मुण्डा एवं देयर कंट्री'**[3] में मुण्डा पुरूषों, महिलाओं एवं बच्चों की शहादत के बारे मे जानकरी प्राप्त होती है। **'झारखंड एंन्साइक्लोपीडिया'**[4] रणेद्र और सुधीर पाल द्वारा रचित कृति में झारखंड के अधिवासियों के जीवन, परम्पराओं, आंदोलनों और जीवनशैली का गहन अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शत्रुघ्न कुमार पाण्डे के पुस्तक **'झारखंड का इतिहास'**[5] में झारखंड के स्वायत्तता आंदोलन का स्वतंत्रता संग्राम के साथ जुडाव को रेखांकित करता है। भारत के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित किये गये **'संपूर्ण गाँधी वांग्मय के विभिन्न खंडो'**[6] में गाँधी जी के आंदोलन एवं विचारों जैसे अहिंसा, शराबबंदी, स्वदेशी तथा खादी आदि का बोध होता है, जिसके अनुसार यहाँ के लोगों को राष्ट्रीय आंदोलन से जुडने में सहायक सिद्ध हुए। डॉ. बालमुकुन्द वीरोत्तम की पुस्तक **'झारखंड इतिहास एवं संस्कृति'**[7] गाँधी जी के झारखंड से लगाव एवं यहाँ के क्रियाकलापों

के बारे में अवगत कराती है, जिसका झारखंड की महिलाओं पर विशेष प्रभाव रहा है। डॉ. रामेश्वर उराँव द्वारा रचित किताब **'झारखंड के आदिवासी आंदोलन और महिलाओं की भूमिका'**[8] में महिलाओं की ऐतिहासिक भूमिका उनकी संघर्षशीलता और झारखंड के आंदोलनों में उनकी भागीदारी को दर्शाया गया है।

शोध समस्या का अन्वेषण(Problem to be Investigated):

- झारखंड छोटानागपुर पठार का भाग है, यह प्रदेश विविधताओं से भरा है यहाँ कई जनजातियों का निवास है। इन जनजातियों की विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा रही है। इनकी परंपराओं का राष्ट्रीय आंदोलन में प्रभाव को जानना है।
- 1857 के गुमनाम महिला स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में अन्वेषण करना व राज्य के कई स्थानों यथा संथाल परगना, राँची, कोल्हान, सिंहभूम आदि के महत्व को रेखांकित करना है।
- झारखंड में राष्ट्रीय आंदोलन के प्रारंभिक चरणों के उद्‌भव एंव प्रसार की विभिन्न पहलुओं पर विचार करना है एवं भावी आंदोलनों के लिए यहाँ के अधिवासियों के प्रेरणा स्रोतों एंव प्रभाव पर चर्चा करना है।
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को सफल बनाने में विभिन्न वर्गों, समूहों तथा कईयों के त्याग, बलिदान एवं अथक प्रयासों की अति महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इसी परिप्रेक्ष्य में झारखंड के महिलाओं की भूमिकाओं को समझना है।
- झारखंड के महिला स्वतंत्रता सेनानियों के जीवन परिचय, महत्वर्पूण घटनाओं एंव भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा के स्रोत को रेखांकित करना है।

शोध का उद्देश्य(Objective of the Research):

- झारखंड की गुमनाम महिलाएँ जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में आदम्य साहस का परिचय दिया जिसे शोध के माध्यम से उजागर करना प्राथमिक उद्देश्य है।
- झारखंड आदिम बहुल राज्य है, यहाँ के अधिवासियों ने स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीय नेतृत्वकर्ताओं के साथ मिलकर आज़ादी के आंदोलन में भाग लिया शोध के माध्यम से उसे राष्ट्रीय पटल पर लाना उद्देश्य है।
- यह शोध उन कारणों का विश्लेषण करेगा, जिनके कारण झारखंड की महिलाओं का योगदान स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में कम प्रलेखित है और उन्हें पुनः एक प्रतिष्ठित स्थान दिलाने की आवश्यकता को रेखांकित करेगा।
- यहाँ के स्वतंत्रता सेनानी व उनकी सहयोगी महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन को गति दी जिसे प्रकाश में लाना, शोध का उद्देश्य है।

शोध–प्रश्न(Research Question):

- 1857 के विद्रोह का झारखंड पर क्या प्रभाव रहा? यहाँ के महिलाओं ने अपना योगदान किस प्रकार दिया? झारखंड के अधिवासियों की भूमिका कैसी रही?
- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन यथा बिरसा उलगुलान, गाँधीवादी विचारधाराओं, आंदोलन आदि का महिलाओं पर क्या प्रभाव पड़ा एवं महिलाओं के योगदान का मुख्य पहलू क्या रहा?
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में झारखंड की महिलाओं का क्या योगदान रहा और इसमें झारखंड की भूमिका का समावेश कितना है?
- झारखंड की प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानी कौन–कौन थी?

- इन महिलाओं के योगदान का समाज एवं संस्कृति पर क्या प्रभाव रहा है?

शोध प्रविधि एवं रूपरेखा(Research Design & Methodology):

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में झारखंड की महिलाओं का योगदान अतुल्यनीय रहा है, जिसके ऐतिहासिक अध्ययन के लिए तुलनात्मक, ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक के साथ–साथ वर्णनात्मक विधियों का प्रयोग किया जाएगा। शोध कार्य को स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित करने की योजना है।

	भूमिका
पहला अध्यायः	झारखंड का भौगोलिक परिचय
दूसरा अध्यायः	1857 की क्रांति में झारखंड का योगदान
तीसरा अध्यायः	झारखंड में राष्ट्रीय आंदोलन का उद्‌भव
चौथा अध्यायः	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में झारखंड की महिलाओं का योगदान
	उपसंहार
	ग्रंथ सूची

डाटा संग्रहण एंव विष्लेषण में उपकरणों का प्रयोग(Tools to be used in the collection of data and Analysis):

प्रस्तावित शोध प्रबंध में ग्लोब, मानचित्र, एटलस, चित्र, रिकॉर्डिंग उपकरण, मौखिक परंपराओं (गीत, नृत्य, और लोककथा) इत्यादि की सहायता से ऐतिहासिक घटनाओं की दशा–दिशा, सीमाएँ, स्थानीयकरण तथा प्राकृतिक स्थितियों का ज्ञान कराया जा सकेगा, जिससे कि वे संबंधित घटनाओं का कार्य–करण संबंध स्थापित किया जा सके। इन उनकरणों के मदद से तथ्यों का स्थानीकरण होता है और वे ऐतिहासिक बन जाते है।

प्रस्तावित शोध प्रबंध की सामग्री राजकीय लाइब्रेरी धनबाद, सेंट्रल लाईब्रेरी राँची, झारखंड के जामताड़ा ज़िला के विभिन्न पंचायतों की लाइब्रेरी, नेशनल लाइब्रेरी कोलकात्ता, खुदाबख्श ओरिएण्टल लाइब्रेरी पटना, गोवा स्टेट सेंट्रल लाइब्रेरी,राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली, एशियाटिक सोसाइटी ऑफ मुंबई, सरकार के विभिन्न वेबसाइडों आदि में उपलब्ध है।

प्रस्तावित शोध कार्य के महत्व(Significance of Proposed Work):

प्रस्तावित शोध कार्य में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में झारखंड की महिलाओं के योगदान के संदर्भ में गहन अध्ययन किया जाएगा। इन वीरंगनाओं के बलिदान की गाथा एवं इनके योगदान के विस्तृत अध्ययन के अकादमिक महत्व को इतिहास की पुस्तकों में उचित स्थान प्राप्त कराने में होगा। इनके शोषण, स्वाभिमान, एवं स्वतंत्रता के हनन के प्रति लोगों में प्रेरणा के स्रोत के अतिरिक्त उर्जा पुंज का कार्य करेगा। इन महिलाओं के योगदान स्त्री–पुरूषों को साथ मिलकर अन्याय के विरूद्ध लड़ने एवं साझी कार्य संस्कृति का विकास करने में मदद करेगी।

इनके योगदान यथा 1857 के विद्रोह में कैसा रहा, बिरसा आंदोलन (1899–1900) में क्या भूमिका रही, कैसे इन महिलाओं ने गाँधी जी के विचारों को अपनाया एवं राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ने में सहायक हुई, किन–किन सामाजिक–सांस्कृतिक अवरोधों का सामना करना पड़ा एवं अन्य चुनौतियों के बारे में इससे संबंधित जानकारी जुटाने में सहायता होगी जो शोध कार्यों को आगे बढ़ाने में मदद मिलेगा।

समकालीन ज्ञान में योगदान(Contribution of the Existing Knowledge):

झारखंड की महिलाओं ने झारखंड के समाज एवं संस्कृति को सहेजने एवं संवारने में अपनी अहम भूमिका को निभाई है। इन्होंने अपने असीम बहादूरी एवं साहस का परिचय देते हुए स्वाभिमान, स्वतंत्रता एवं स्वधर्म के लिए विभिन्न चुनौतियों एवं संघर्षों का सामना किया यथा संथाल विद्रोह, 1857 का विद्रोह, मुंडा विद्रोह, ताना भगत आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन में अपने सामाजिक—सांस्कृतिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए पुरूषों से कंधे से कंधा मिलाकर लड़ी थी एवं कइयों के लिए प्रेरेणा स्त्रोत रहीं है। ये वीरांगनाएँ झारखंड के इतिहास एवं भारत के स्वर्णिम इतिहास का हिस्सा है। किन्तु इनके योगदान का व्यापक प्रचार—प्रसार नहीं ही पाया है। ये नायिकाएँ इतिहास में गुमनामी के दौर से गुजर रही है। इसका प्रमुख कारण इस क्षेत्र में शोध का अभाव रहा है।

शोध का भावी स्वरूप(Aspect of Research Work):

यह शोध भविष्य में झारखंड के साथ—साथ भारत के इतिहास में अति महत्वपूर्ण साबित होगा। इस शोध का उपयोग अकादमिक रूप से, इतिहास के विद्यार्थियों, झारखंड के इतिहास में रूचि रखने वाले अध्येयता, पुस्तक, शोध कार्यों आदि में उपयोगी होगा। इसका उपयोग लिंग—भेद मिटाने पर सेमिनार, व्याखान, जन जागरूकता, समाज में एकजुटता लाने एवं लोगों को अपनी परंपरा, संस्कृति को संरक्षण करने में सहायक सिद्ध होगी।

संदर्भ—सूची(Related references):

1. सिंह, अयोध्या, *'भारत का मुक्ति संग्रामः 18वीं और 19वीं सदी के विद्रोह'*, प्रकाशक संस्थान, नई दिल्ली, 1994, पृष्ठ संख्या—335,430
2. चौधरी, शशि भूषण, *'सिविल रिबेलियन इन द इंडियन म्युटनिज (1857—59)'*, वर्ल्ड प्रेस, कलकत्ता, 1957
3. रॉय. शरतचन्द्र, *'द मुंडाज एंड देयर कंट्री'*, एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुबंई, 1912, पृष्ठ संख्या—341
4. रणेद्र, सुधीर, पाल *'झारखंड एंन्साइक्लोपीडिया'*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2019
5. सिंह, के.एस., *'टाईबल मूवमेंट इन इंड़िया'*, मनोहर पब्लिशर्स, दिल्ली, 1982.
6. पाण्डेय, शत्रुघ्न कुमार, *'झारखंड का इतिहास'*, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशक, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ संख्या—165
7. *'संपूर्ण गांधी वांग्मय के विभिन्न खंडो'*, भारत के प्रकाशन विभाग
8. वीरोत्तम, बालमुकुन्द, *'झारखंड का इतिहास एवं संस्कृति'*, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2020
9. उरांव, रामेश्वर, *'झारखंड के आदिवासी आंदोलन और महिलाओं की भूमिका'*, जनजातीय शोध संस्थान, रांची, 2004
10. दत्त,के.के. 'बिहार में स्वतंत्र्य आंदोलन का इतिहास', बिहार ग्रंथ अकादमी, पटना, 2000
11. मुंडा, राम दयाल, *'झारखंड आंदोलनः स्वदेशी लोगों का स्वायत्ता के लिए संघर्ष'*, आई.डब्लू.जी. आई.ए., कोपेंहेगेन, 2003.
12. मुखर्जी, सुमित, *'जेंडर टाईब एण्ड सोसल चेंज इन इंड़िया'*, एंथ्रोपोलोजीकल सर्वे ऑफ इंड़िया, कोलकाता, 2010
13. *सरकार, सुमित, 'आधुनिक भारत', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012*